* व्यवसाय का चुनाव ! → किशोरावस्था में किशोर व किशोरियाँ अपनी व्यवसायिक का चुनाव कर लेते हैं तथा अभिभावक तथा शिक्षक दोनों को किशोर एवं किशोरियों को निर्देशित करना चाहिए।

* किशोरावस्था में शिक्षक का स्वरूप ! →
1) हेडो रिपोर्ट के अनुसार ! → 11-12 वर्ष के आयु में बालक के नसों में ज्वर उठना शुरू हो जाता है इसको किशोरावस्था के नाम से पुकारा जाता है। यदि इस ज्वर का बाढ़ के समय ही उपयोग कर लिया जाए एवं इसकी शक्ति धारा के साथ-साथ नयी यात्रा आरंभ कर दी जाए तो सफलता प्राप्त की [illegible] सकती है।

2) शारीरिक विकास के लिए शिक्षा ! → किशोरावस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन होते हैं। जिनकी उचित शिक्षा प्रदान करके शरीर को मजबूत, सुडौल बनाने का उत्तरदायित्व विद्यालय पर होता है। निम्नलि[illegible] आयोजन कराना चाहिए। जैसे - शारीरिक [illegible] स्वास्थ्य शिक्षा, विभिन्न प्रकार के शारीरि[क] व्यायाम, सभी प्रकार के खेल - कूद

3) मानसिक विकास की शिक्षा ! → किशो[रा]वस्था में किशोर एवं किशोरियों के रु[चि] पर विशेष ध्यान देना चाहिए तथा वि[illegible]

विषयों की शिक्षा देनी चाहिए। जैसे → कला, विज्ञान, साहित्य, भूगोल, इतिहास आदि विषय पढ़ाना चाहिए।
कल्पना शक्ति, जिज्ञासा शक्ति, दिवा स्वप्न, वाद - विवाद, कविता लेखन, साहित्य, गोष्ठी, पाठ्य - सहगामी क्रियाएँ।

4) संवेगात्मक विकास की शिक्षा :→ किशोरावस्था में अनेक प्रकार के संवेग उत्पन्न होते हैं। इसके कारण किशोरावस्था में अत्यधिक संघर्ष पाए जाते हैं। इसके कुछ संवेग अच्छे तथा कुछ बुरे होते हैं। अतः शिक्षा के द्वारा इसे संवेगों की उचित तथा अनुचित का ज्ञान कराया जाता है। शिक्षा द्वारा किशोरावस्था में संवेगों को विभिन्न विषयों द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। जैसे - कला, साहित्य, सांस्कृतिक कार्य आदि की व्यवस्था।

* किशोरावस्था में शिक्षा का स्वरूप

1) सामाजिक संबंधों की शिक्षा :→ किशोरावस्था में अपने समूह को अत्यधिक महत्त्व देता है। और उसमें आचार - व्यवहार की अनेक बातें सीखता है। इसलिए विद्यालय में सामूहिक कार्यक्रम करानी चाहिए। जैसे - सामूहिक खेल, स्काउटिंग, N.S.S. आदि।

2) व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुसार शिक्षा! →
~~किशोरावस्था में विद्यालयों में किशोर~~
किशोरावस्था में रुचि, योग्यता के अनुसार शिक्षा देनी चाहिए।

3) पूर्व व्यावसायिक शिक्षा ! → किशोरावस्था में विद्यालयों में किशोर को व्यावसायिक शिक्षा देनी चाहिए। जैसे - कृषि, बिजली, ITI.

4.) जीवन दर्शन में शिक्षा :- किशोरावस्था में बालक अपने जीवन के बारे में सही या गलत के बारे में तर्क कर सकता है। तथा अपने भविष्य के बारे में फैसला ले सकता है तथा अपना व्यवसाय चुन सकता है।

5) धार्मिक व नैतिकता की शिक्षा :→ किशोरावस्था में बालक धार्मिक विचार को नहीं मानता। क्योंकि उसके मस्तिष्क में विभिन्न प्रकार के विचार उठते [illegible] कारण उसके उठते द्वंद्व स्थिति [illegible] इस कारण "कोठारी आयोग" ने धार्मिक व नैतिक शिक्षा को विद्यालयों में किशोरों को दिया जाना उचित समझा।

6) अपराधी प्रवृत्ति पर अंकुश : — किशोरावस्था में अपराधी प्रवृत्ति अत्यधिक पायी जाती है जिसके कारण

Scanned with CamScanner

उसके अंदर निराशा आ जाती है। इसको दूर करने के लिए अपराध पर अंकुश लगाना चाहिए। विद्यालय उसको अपनी योग्यता का अनुभव करके उसकी निराशा को दूर करें।

7) किशोर निर्देशन :— किशोरों को निर्णय करने का कोई अनुभव नहीं होता इसलिए किशोरों को निर्देशन देना चाहिए।

* सांस्कृतिक विभिन्नताएँ एवं किशोर :—

हमारे देश में प्रमुख चार संस्कृतियाँ पायी जाती हैं। जैसे — हिंदू, मुस्लिम, सिख - ईसाई।

1) हिंदू संस्कृति :→ प्रातः काल स्नान करना, पूजा करना, अतिथियों का स्वागत करना, देवी-देवताओं की पूजा करना, बड़ों का सम्मान करना, इस प्रकार के नैतिक गुण में आध्यात्मिक गुण की शिक्षा दी जानी चाहिए। परिवार में धार्मिक लचीलापन पाया जाता है। जैसे — कोई हनुमान की पूजा करता है, कोई शेरावाली तथा कोई अन्य की पूजा करता है।

2) मुस्लिम :→ नमाज पढ़ना (पाँचों वक्त) उर्दू पढ़ना, टोपी पहनना, महिलाओं को बुर्के में रहना, धीरे बात करना। मदरसों में शिक्षा, मकतब में पढ़ना। पाश्चात्य

9/22
Scanned with CamScanner

27 Wednesday
WK 09 • 058-307 FEBRUARY

परिधानों से दूर रहना, इबादत करना, मुस्लिम शिक्षा में तकनीकी शिक्षा दी जाती है। जरदोजी (कढ़ाई का काम) की शिक्षा, कालीन बनाना, सिलाई करना, गाड़ियों की मरम्मत करना आदि उनका काम है।

3) सिख संस्कृति :→ गुरुद्वारा, कड़ा पहनना, कृपाण धारण करना, पंजाबी बोली, लोहड़ी गाना, केश रखना, जूड़ा - जूड़ी बनाना।

4.) ईसाई धर्म :→ चर्च में पूजा, ईसा मसीह की पूजा, भाषा अंग्रेजी, पर्व - गुड - फ्राइडे, पार्टियाँ मनाना, पाश्चात्य वस्त्रों पहनना।

10/22

2019

Scanned with CamScanner

27 Wednesday
WK 09 • 058-307 FEBRUARY

परिधानों से दूर रहना, इबादत करना, मुस्लिम शिक्षा में तकनीकी शिक्षा दी जाती है। जरदोजी (कढ़ाई का काम) की शिक्षा, कालीन बनाना, सिलाई करना, गाड़ियों की मरम्मत करना आदि उनका काम है।

3) सिख संस्कृति :→ गुरुद्वारा, कड़ा पहनना, कृपाण धारण करना, पंजाबी बोली, लोहड़ी गाना, केश रखना, जूड़ा-जूड़ी बनाना।

4.) ईसाई धर्म :→ चर्च में पूजा, ईसा मसीह की पूजा, भाषा अंग्रेजी, पर्व - गुड-फ्राइडे, पार्टियाँ मनाना, पाश्चात्य वस्त्रों पहनना।

10/22

2019

Scanned with CamScanner